भाषा का अर्थ -बोलना अथवा कहना

भाषा के दो रुप -मानव भाषा और मानवेतर भाषा

भाषा के माध्यम- दृष्टि,स्पर्श,गंध,ध्वनि,श्रवण,

भाषा की परिभाषा-

" भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते है।"

****भाषा की परिभाषा****

“भाषा मानव उच्चारण अवयवों द्वारा उच्चारित याद्दच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है जिससे भाषा-समाज के लोग अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।”

भोलानाथ तिवारी

“मैं भाषा को वाक्यों का एक समूह समझता हूँ जो निश्चित तत्वों के समूह से संरचित होते हैं।”

चाम्स्की

भाषा के अभिलक्षण

1. यादृच्छिकता,
2. सृजनात्मकता
3. अनुकरणग्राह्यता
4. परिवर्तनशीलता,
5. विविक्तता,
6. द्वैतता
7. भूमिकाओं का पारस्परिक परिवर्तन,
8. अंतरणता
9 असहजवृत्तिकता

भाषा के अभिलक्षण

1. यादृच्छिकता-

वह समाज की इच्छा अनुसार माना हुआ संबंध है । यदि सहज-स्वाभाविक संबंध होता है ,तो सभी भाषाओं में एक वस्तु के लिए एक ही शब्द प्रयुक्त होता है।‘पानी ‘ के लिए सभी भाषाएं ‘पानी ‘का ही उपयोग करती है।

भाषा के अभिलक्षण

2. सृर्जनात्मकता- (Creativity) मानव सीमित शब्दों को ही भिन्न-भिन्न ढंग से प्रयुक्त कर वह अपने भावों को अभिव्यक्त करता है।जैसे –‘मैं ‘,‘तुम ‘,उस ‘बुलवाना ‘इन चार शब्दों से बहुत सारे नए वाक्यों का सृजन किया जा सकता है –

१ मैंने उसे तुम से बुलवाया।
२ मैंने उन्हें तुमसे बुलवाया।
३ उसने मुझे तुम से बुलवाया।
४ उसने तुम्हें मुझ से बुलवाया।

भाषा के अभिलक्षण

3. अनुकरणग्राह्यता-

मनुष्य भाषा को समाज में अनुकरण से धीरे-धीरे सीखता है। भाषा को अनुकरण ग्राह्यता के कारण ही एक व्यक्ति भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाएं भी अनुकरण से सीख सकता है। यदि माता – पिता ‘ पीने ‘ के पदार्थ को ‘ पानी ‘ तथा ‘ खाने ‘ के पदार्थ को ‘ रोटी ‘ कहते हैं तो बच्चा भी ‘ पा ,पानी ‘ रोती ‘ और रोटी का उच्चारण करते हुए उच्चारण के अनुकरण की पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

भाषा के अभिलक्षण

- परिवर्तनशीलताः- जैसे-संस्कृत का ‘कर्म’ प्राकृत में ‘कम्म’हो गया तो आज ‘काम’ के लिए प्रयुक्त होता है।इस तरह ....

- विविक्तताः- मानव भाषा का स्वरूप तत्वतः कई घटकों या ईकाइयों में विभाज्य है। जैसे-वाक्य एकाधिक शब्दों से बनता है तथा शब्द एकाधिक ध्वनियों से।यह बहुघटकता या विविक्तता अन्य जीवों में नहीं मिलती।

भाषा के अभिलक्षण

- द्वैतताः- वाक्य या उच्चार की दो 1.सार्थक 2.निरर्थक इकाइयाँ होती है। दो स्तरों की स्थिति को द्वैतता कहते हैं। ‘आप अच्छे हैं’ वाक्य में आप+ अच्छे+हैं सार्थक इकाइयाँ(रूपिम)हैं।दूसरे स्तर की अ+अ+प+अ...आदि(स्वनिम) ध्वनियाँ हैं।
- भूमिकाओं का परस्पर परिवर्तनीयताः- वक्ता-श्रोता. वकता जब बोलता है तब श्रोता सुनता है,फिर जब श्रोता उत्तर देता है तब वह श्रोता हो जाता है।
- अंतरंणताः- (स्थान और काल का अन्तरण) मानव भाषा मेंवर्तमान के साथ-साथ भूत-भविष्य के विषय में कहने में समर्थ है।
- मौखिकता-श्रव्यताः-भाषा मुँह से बोली जाती है,कान से सुनी जाती है।जो अन्य में नहीं..

भाषा के अभिलक्षण

- **असहजवृत्तिकता-** (Non Instinctivity)- मानवेतर भाषा प्राणी की सहज वृत्ति आहार निद्रा, भय, मैथुन से ही सम्बद्ध होती है और इसके लिए वे कुछ ध्वनियों का उच्चारण करते है किन्तु मानव-भाषा सहजवृत्तिक नहीं होती है। वह सहजात वृत्तियों से सम्बन्धित नहीं होती। भाषा के ये अभिलक्षण मानवीय भाषा को अन्य ध्वनियों या मानवेतर प्राणियों से अलग करने में समर्थ हैं।